दिनांक 30 अप्रैल, 2022 को विवेकानंद केंद्र, गुवाहाटी के स्थापना दिवस पर माननीय राज्यपाल प्रो. जगदीश मुखी जी का संबोधन

आज के इस कार्यक्रम में विराजमान परम पूज्य
श्री गोविन्द देव गिरि जी महाराज,

अरुणाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री
श्री प्रेमा खांडू जी,

सिक्किम से आए श्री नामजियल लेप्चा जी,

मेघालय से श्री राथेल खोंगसित जी,

इस केंद्र के अध्यक्ष डॉ. जोराम बेगी जी,

उपाध्यक्ष श्री हनुमंत राव जी,

एवं उपस्थित देवियों और सज्जनों ।

नमस्कार,

विवेकानंद केंद्र, गुवाहाटी के आज गौरवमय 25वें स्थापना दिवस के इस कार्यक्रम में आकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है और मैं विशेष रूप से अपने आप को धन्य मानता हूँ , क्योंकि आज यहां पूज्य स्वामी गोविंददेव गिरि जी महाराज का सानिध्य व आशीर्वाद प्राप्त हुआ। आपश्री के आशीर्वाद ने हम सभी को अपने कर्तव्यों के निर्वहन हेतु एक नई ऊर्जा प्रदान की है। मुझे विश्वास है कि स्वामी महाराज जी के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन से विवेकानंद केंद्र की गतिविधियां और अधिक व्यापक होंगी।

मैं अपने जीवन में स्वामी विवेकानंद जी के कार्यों और शिक्षाओं से काफी प्रभावित रहा हूं। कन्याकुमारी में स्वामी विवेकानंद जी के स्मारक के लिए जब पूरे देश में चंदा इकट्ठा किया जा रहा था, तो मैंने भी अपने क्षेत्र के लोगों से एक-एक रुपये का चंदा इकट्ठा किया था। मेरे विचार में - स्वामी विवेकानंद जी, आधुनिक भारतीय संस्कृति के जनक हैं। उन्होंने भारतीय अध्यात्म और संस्कृति को विश्व भर में फैलाने का महान काम किया। विवेकानन्द केन्द्र, स्वामी विवेकानन्द जी के आदर्शों एवं सिद्धान्तों को प्रसारित करने के उद्देश्य से स्थापित एक सांस्कृतिक केंद्र है।

यह केंद्र, कन्याकुमारी की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसकी परिकल्पना स्वयं कन्याकुमारी केंद्र के संस्थापक आदरणीय एकनाथ जी ने की थी। मुझे यह जानकर खुशी है कि यह केंद्र पूरे पूर्वोत्तर क्षेत्र में सराहनीय कार्य कर रहा है।

भारत के आध्यात्मिक महापुरुष स्वामी विवेकानंद जी का संदेश आज पूरे विश्व में प्रेरणास्रोत बना हुआ है। युवाशक्ति किसी भी समाज, जाति एवं देश की रीढ़ होती है। देश के महान संतों, महापुरुषों से हमारी युवा पीढ़ी बहुत कुछ सीख सकती है। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारा भारतवर्ष अनेक विश्वविख्यात विभूतियों की जन्मस्थली रहा है। उनमें विवेकानंद जी का स्थान महत्वपूर्ण है।

आप सब भलीभांति जानते हैं कि स्वामी विवेकानंद जी, केवल भारत में ही नहीं बल्कि अमेरिका, इजिप्ट, इजरायल, अफ्रीका आदि देशों में घूम-घूमकर अपने उदात्त भाषण से विश्व को आकर्षित किया था। उन्होंने अपने भाषण के दौरान विशेष रूप से युवा पीढ़ी को सदा आगे बढ़ने तथा कर्म के प्रति निष्ठा भाव रखने का आह्वान किया था। उन्होंने मुंबई में देश के युवाओं को संबोधित करते हुए एक बार कहा था –

'हे देश के निर्माण के कर्णधारों, देशभक्त बनो!'

उस जाति से प्रेम करो, जिस जाति ने अतीत में हमारे लिए बड़े-बड़े काम कर चुके हैं। जीवन का अर्थ विस्तार है। विस्तार और प्रेम एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए प्रेम ही जीवन है। प्रेम ही जीवन का एकमात्र गति निर्धारक है। तुम कभी स्वार्थी मत बनो, क्योंकि स्वार्थ ही मृत्यु है। जिसके हृदय में प्रेम नहीं, वह मृत के अलावा कुछ नहीं है।

हे युवकगण ! तुम दरिद्र, मूर्ख और पद-दलित मानव की पीड़ा को अपने हृदय से अनुभव करो। जितना बन सके, तुम इनकी सहायता करो। अपने मन को विस्तार दो। धन की लालच मत करो। न धन से काम होता है, न नाम यश से। प्रेम ही वह चीज है, जिससे असंभव को संभव बनाया जा सकता है। चरित्रवान व्यक्ति ही हर बाधा-विघ्न की दीवारों के बीच से अपना रास्ता बना सकता है।"

ऐसे स्वामी विवेकानंद जी के अनेक ओजस्वी विचार हैं, जो आज हमारे तन-मन को ऊर्जा से भर देती है।

स्वामी विवेकानंद जी 29 वर्ष की अल्पायु में ही अपनी आध्यात्मिक शक्ति और नैतिकता के बल पर जिस मुकाम तक पहुंचें, वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में सदैव लिखा रहेगा।

उनके अनमोल विचार समाज के हर तबके के लोगों में उत्साह और जोश पैदा करते हैं और कर्म के प्रति हमारा मनोबल बढ़ता है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृति है। इसे यूनेस्को ने भी स्वीकारा है। आइए हम अपनी संस्कृति को पुनः विश्व में स्थापित करने के लिए मिलजुलकर प्रयास करें।

मैं, माँ भारती की सेवा में लगे विवेकानंद केंद्र के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को हृदय की गहराइयों से धन्यवाद व आभार देता हूँ।

गौरवोज्वल 25वें स्थापना दिवस की पुनः हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद!